34

निबन्ध

चादू

सौभाग्यसिंह शेखावत

निबन्धकार–परिचै

सौभाग्यसिंह शेखावत रौ जनम भगतपुरा (सीकर) में 22 जुलाई, 1924 में होयौ। आप राजस्थानी साहित्य–जगत में प्राचीन साहित्य रा सोधवेता रै रूप में आपरी अलायदी ओळखाण राखै। आप राजस्थानी शोध–संस्थान, चौपासनी (जोधपुर) मांय नौकरी करता थकां केई प्राचीन पांडुलिपियां रौ संपादन करियौ। आप राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रा दो बार अध्यक्ष रैया अर राज्य सरकार कांनी सूं गठित राजस्थानी भाषा उन्नयन समिति रा ई अध्यक्ष रैया।

आपरी छपियोड़ी पोथियां है– राजस्थानी निबन्ध संग्रह, राजस्थानी साहित्य सम्पदा, पूजां पांव कवीसरां, जीण माता, ईसरदास नामक विभिन्न चारण कवि, राजस्थानी साहित्य–संस्कृति और इतिहास। आप 'जाडा मेहडू ग्रन्थावली', 'डूंगरसी रतनू ग्रन्थावली' (भाग : 1 व 2), 'राजस्थानी वीर गीत संग्रह' (भाग 1 सूं 4), 'राजस्थानी बातां' (भाग 3,4,5 अर 7), 'विन्है रासौ', 'बलवद विलास', 'शेखावाटी के वीर गीत', 'ऐतिहासिक रुक्के–परवाने' आद केई महताऊ ग्रन्थां रौ सम्पादन करियौ। आपरौ काव्य–संग्रै 'रणरोळ' ई चरचा में रैयौ।

पाठ–परिचै

संकलित निबन्ध 'चाटू' जथारथवादी है। लोंकी रा लख मारग ज्यूं चाटू हर जुग, हर वातावरण अर हर परिस्थिति में रैवै। उणरी माया नै कोई नीं समझ सकै। चाटू रै आगै मोटा–मोटा गजमान गजपतियां रै सीयौ चढ जावै। चाटू रै पांण राजनीत, समाजनीत, साहित्यनीत सैंग नीतियां पुळै। सो चाटू सूं डरणै में ईज खेम–कुसळ है। आंख उघाड़ नै चाटू री आरती उतारौ, इणी में है सगळां रौ निस्तारौ। सबद–चयन घणौ उम्दा अर भासा घणी सांतरी अर रळयावणी है।

चादू

घणा लोग चाटू नै कोरौ लाकड़ी रौ टुचकलौ, रूंख रौ छांग्यौ–छाल्यौ ठूंठियौ, खाती रा रंदा सूं रांद काटियोड़ौ रसोवड़ा रौ राछ, तरकारी–तींवण रौ रमतियौ, हांडी रौ हम्मीर, चूल्हा रौ चांद नै बांठ–बोझा, खेजड़ी, कैर रौ जलम्यौ–जायौ ईज मानै उण रा आपांण ऊरमां नै नीं ओळखै, जद ही चाटू रा चमत्कारां सूं अणजांण घणा अक्कल रा उजीर, बुध रा वेदव्यास, ग्यान रा गणेश, गोबर–गणेश बणिया थकां आपरी आवड़दा पूरी कर नांखै, रोही रा त्रिसा म्रिगला ज्यूं पद–पांणी रा खोज काढता भंभाभोळी खावता फिरै। फेर भी उणां अेक हिरणियांरी हक त्रिखा नीं बुझै। उणां री हकां रा बादळा बणै नै थोथा ललूससा मिट जावै। सियाळा रा सीकोट री भांत प्रभात रा वणै नै दोपैर रा गळ जावै, काचा–कळवा

ज्यूं छाऊं–म्याऊं व्है जावै। भोळा मिनख कांई जाणै चाटू कांई है। चाटू किण भांत संसार रा आखा सुख मांणै। बिना चून लूण री रोटी पोवै नै सुख सूं खूंटी तांण सोवै। चाटू रै धकै ठग री ठगाई, बाजीगर री हाथ सफाई, झगड़ायतां में संप करावणियां री रखाई री विद्या नै अड़कसी री आजार मिटाई, मेळ मिळाई सगळी बातां पाणी भरै। चाटू जीभ री लड़ाई री कमाई खावै। उण री जीभ री करामात आगै मोटा–मोटा माणसां री सकळाई री बाजती झालरां ठम जावै। किस्तूरी री सौरम नै हींग उडा नांखै; कपूर री सुवास लसण रै सांम्है न्हास जावै, उणी रीत चाटू रै आगै सगळां री अकल रा पैड़ा जाम व्है जावै।

सीधा स्याणां मिनख आ जाणै कै चाटू खाली माटी री हांडी रौ मांटी ईज हुवै, रंधीण रौ राईवर ईज हुवै, भाजी–भुगती रौ भरतार ईज हुवै, खीचड़ी रौ खावद ई हुवै, राबड़ी रौ रसियौ ईज हुवै, पण इत्ती'ज वात नीं है। चाटू रसोवड़ा रौ मोटौ ताजदार ताजीमी उमराव हुवै। उणरै आगै देस–दीवाण ऊभा दांत तिड़कावै, पंच हजारी पग पंपोळै। चाटू री ओळग चाकरी में, टैल–बंदगी में ठाडा–ठाडा ठाकर ऊभा थड़ी करै। चाटू री चाकरी में बिना धेल–टक्कै घणा सबळा–निबळा लखटकिया, मैफलिया, बातां रा बालम, खटपटिया खुमाण, फंफोड़, मूंढां रा मांटी, मटैड़ा रै चाक रै थापा रै अणगार रा आदमी अठपौर ऊभा रैवै।

चाटू नीं चाकी चलावै, नीं खेत कमावण जावै, नीं माटी भरी काठड़ी उठावै, नीं पाळौ पग उठावै, नीं लूखौ खावै। आखै दिन काम रै नांव सूं फळी ईज नीं फोड़ै। बस बातां रा बिणज बिणजै नै लाखां रा वारा–न्यारा करै। मोटा मिनखां री थळी पर जा मुजरौ करै। साच नै कूड़, कूड़ नै साच कैयनै उणां रा मन भरमावै। बस, फेर छत्तीस बिजनां रा भोग भोगै, नचीत मल्हार गावै। पण आ करामात कांई कम हुवै। इण रा बळ सूं तौ लूंठा–लूंठां रौ धूंवौ काढ नांखै। उणां नै चाटू नीं घर रा छोडै, नीं घाट रा। जिण बखत चाटू चढनै चाकरी पर चालै, उण बखत धरा धूजै, मेघ घड़ूकै, देवराज रौ सिंघासण डुलै। कुण जाणै चाटू किण समै कांई कुबध कर नांखै। कांई बात किण बखत पैरासूट कर दै! किण भोळा भूतनाथ रा चित्त नै चकरी चढा देवै!

चाटू परवार रौ धणी हुवै। चाटू रौ जुवराज चामचौ, रायकंवरी चमची, परधान पलटौ, कोटवाळ कुड़छौ, फौजदार झरौ, प्रांतपाळ टीपरियौ, तन–दीवांण मिरियौ, पौसाकी पळौ, खवास खुरचणौ नै तोबची ताकळौ हुवै। चाटू चालै जद अै सारा रांण–खुमांण उणनै विदा करै। अै सारा अेक खांदा री माटी रा बासण हुवै अर समै पड़ै चाटू री बात नै हेठै नीं पड़बा देवे, ऊपर री ऊपर झेल लेवै। अै पांणी पैली पाळ बांधै। उळझी–सुळझी नै सांधै। चाटू जद आपरा लवाजमा रै साथै चाकरी माथै बहीर हुवै, जणां जाणै पांख आयोड़ी कीड़ी ज्यूं उडतौ लखावै। गुरड़ री गति, भूत री माया नै बादळ री छाया ज्यूं छिण–पलक में झबकौ नांखनै अलोप व्है जावै।

चमचौ तौ चाटू सूं भी दोय पग आघा काढै। टणका–टणका भारीखम बुध रा भाखर गिणीजणियां नै हांडी री खुरचण ज्यूं खुरच नै ठौड़–ठाणै लगा देवै। चमचौ राजपुरखां रै असवाड़ै–पसवाड़ै इयां बुवै, जियां दीवटियां रै साथै–साथै अंधारौ चालै। चमचा रै मूंडै में जीभ इण रीत पळेटा मारै जाणै हळाबोळ रै कड़ाव में पलटौ पळेटा खावै, हरी दूब कांनी हिरणी माल्है, भाखर री ढळांत कांनी बरसाळा रौ बाहळौ चालै, कराड़ां चढी नदी रौ नीर चालै, डूंगरां रा खाळां धकै धूड़ चालै, अैड़ी चाटू री असवारी चालै।

लोग कैवै कै चाटू रौ कोई मिनख जमारा

में जमारौ है! चाटू री पूठ पाछै सगळा उण री चह्चै–पह्चै करै, पण मूंडागै सैंग उण सूं डरै। इण में डर–भय री कांई बात है। ऊंदरा रौ जायौ तौ बिल ईज खोदसी। पछै चाटू आपरी चाटूगिरी सूं टाबर–टींगरां नै 'सैंटपाल' में भणावै तौ किणी रौ हकनाक पेट क्यूं दूखै। आप आपरी करामात नै आप–आपरा कार है। चाटू रौ धंधौ चाटूगिरी। चमचा रौ काम चमचागिरी। पण, चमचागिरी सूं ईज चमचम मिल जावै तौ सगळा चमचा नीं बण जावै! चोंच तौ कबूतर ई चलावै, पण आवभगत कोयल री वाणी री ईज हुवै। कोरी जीभां री लपालोळ सूं ईज पार नीं पड़ै। चाटू री भणाई बी.अेड. अेम.अेड. नै आई.सी.अेस. सूं भी मुंहगी पड़ै है। चमचां री पोसाळ न्यारी ईज हुवै। चमचा री मुहारणी नै घोखियां ईज काम नीं सधै। खाली बारहखड़ी रा बारह कक्का नै लोहड़ौ कु, वडौ कू रटबा सूं ईज कारज सिध नीं हुवै। रटायोड़ौ सूवटौ गोविंद, गोपाल नै नारायण तौ बोल लै, पण कांई वौ गोविंद नारायण रा चरित्रां नै तोल लै, गीता रा ग्यान री घुळगांठां खोल लै!

बोलबा में तौ पंखेरुवां में कागलौ ईज कक्का बोलै, मोल्यौ ईज किक्की कैवै, कूकड़ौ ईज कूं चवै, कोयल ईज कौक्कउ बोलै, तूती ईज तूंई तूंई भणै अनै घणा जानवर कुंई नै कुंई आखर धुन बोलै ईज है, पण इण सूं कांई? उणनै कदै लाख–पसाव मिळतौ दीठौ है? चाटू री भणाई री पोसाळ बीजी ईज हुवै। चाटू रौ 'कोर्स' न्यारो ईज हुवै। चाटू री 'डिग्री' चाटू नै ईज मिळै। चाटू री पढाई में विख री बीजगणित भणाईजै। संसार रौ सनेह रौ खोगाळ नै बिणास रा बीज चाटू री वचन विदग्धता हुवै। बासग नाग रौ फण, आग री झाळ ईज चाटू रौ सुभाव हुवै। बोलण में गूंदगिरी रा सांटा जैड़ौ मीठौ हुवै, पण करतूतां में पीळिया गोयरा नै ई परै बैठावै। अैड़ौ डंक मारै कै आगलौ पाणी ईज नीं मांगै। जमराज रा डंडिया सूं डंडिया गेहर रमणौ नै चाटू सूं अड़कसी करणौ बरोबर। चाटू सूं तौ डंडियौ मिळायौ राखै सो ईज भलौ। जिण री अकल उधारी लियोड़ी हुवै, वौ ईज चाटू री बात नै उथेळै। नींतर तौ उण काळ–जीभा सूं होठांजोड़ी कुण करै।

चाटू नै चाटू कैवणौ नै ऊजड़ बैवणौ बरोबर। अंवळी री संवळी नै संवळी री अंवळी करणी चाटू रै डांवळै हाथ रौ खेल गिणीजै। कोई चाटू री करणी माथै रीसां बळै तौ लाख बळौ, औ तौ चाटू रौ सुभाव है कै इण तरफ रा भाखर उण तरफ नै उण तरफ रा डूंगर इण तरफ धर देवणा।

चाटू री कोई बंधी–बंधाई पगार नीं हुवै। उणरी पैदा ऊपर–छाळा री हुवै। कणां महीनां री हजार ई पटक लेवै नै कणाई सौ–दोय सौ माथै ईज सरमोख लेवणी पड़ै। चाटू री चाकरी नै घणा लोग हिकारत री आंख सूं जोवै। पण इण जुग री जीवाजूंण में थणकढ दूध सारखौ साव निरमळ कुण है? चांद नै इमरत–बरसी कैवै है। इंदर नै धरापत कैवै है। संकर नै महादेव कैवै है, पण उणां नै कळंकी, रुळैट नै मसाणियौ भी तौ कैवै है। मूंडकी–मूंडकी री मत न्यारी हुवै। जितरा मूंडा, उतरी बात। लोग–बागां रा मूंढा रै छींकी थोड़ी ई जड़ीजै। पछै चाटू नै चमचौ चमचागिरी नीं करसी तौ कांई खेत में हळ हांकसी, ऊंट लादसी, कमठां माथै काठड़ी ढोसी, रेवाड़ री मींगण्यां सोरसी, भाखरी रा भाठा भांगसी! अैड़ा काम–धंधा करसी जणां इत्तौ भण–गुण नै कांई कियौ? कांई जुबान री जबा–जोड़ी, बात बणावणी काम नीं गिणीजै! अबोलां री मोती दाणां–सी जंवार पड़ी रैवै अर समै माथै बोलै उणां रा बूंभळा सरै बजार धोळै दिन छै पंसेरी री ठौड़ दो रिपियां किलो बिकै। पराया पेट में आपरै हित री बात उतार देवणौ, आंगळ्यां धरम करणौ कांई ल्होड़ी कळा गिणीजै। ससि कळा–सी सुपेत, संख–सी

धवळ, हिम–सी अमळ नै दूध–सी धोळी हार रै मणकां री भांत पोयोड़ी साव सही, मेह रा जळ री भांत कूड़ धूड़ सूं, आंधी–अरड़ां री खेह सूं अछूती बात नै लुहार रै आरण रा लियाळा बणावण री करामात लागै तौ रगत्या भैरूं तांई बकरां रा कान कुण काटै! कोरी जीभां री लपालोळ सूं ईज नाकौ नीं झळै। जीभ री करामात रै साथै चौसठ घड़ी पगां माथै थड़ी–सी करणी पड़ै।

चाटू रै डर सूं लूंठा–लूंठा धींग धजधारी इण भांत धूजै, जिण भांत थोड़ी–सीक पवन रै हिलोर सूं पीपळ रौ पत्तौ कांपै। चाटू रै आगै मोटा–मोटा गजगात गजपतियां नै सीयौ चढ जावै। चाटू री बात रौ असर तीजारा रा डोडिया, धतूरा रा रस, कपिल रा कोप नै रावण रा रढ सूं घणौ जादा हुवै। चाटू जिण रात जलमियौ, जिण पुळ घड़ीजियौ वा पुळ वाहुड़ नै पाछी नीं आई। चाटू रै पांण राजनीत, समाज नीत, साहित्य नीत सैंग नीतियां पुळै। जिकी जीभ गुलांचिया कबूतरां री भांत जठां–कठीनै लुळती रैवै, वौ ईज खरौ चाटू कहीजै। लोटण कबूतरां री रीत आपरा डील नै नीं मोड़ सकै, वौ साच रा लाख टाका कोथळी में घालियां फिरौ, उणनै पूछणै–बतळावणै खातर बोलणौ बखत किण कनै पड़ियौ है अर कुण लोभ री लाय में बळता आज रा इण दौड़ता–भागता जुग में दुहागण रा गुणवान डावड़ा नै बुचकारण रौ, हिमळास सूं बतळावण रौ साहस कर आपरौ नांव 'ब्लैक लिस्ट' में मंडावै।

चाटू रै भस्मी कड़ा सूं संकर खुद ईज डरतौ लुकतौ फिरयौ, सो चाटू सूं डरणै मं ईज खेमकुसळ है। आंख ऊघाड़ नै चाटू री आरती उतारौ, इणी में है सगळां रौ निस्तारौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

तरकारी–तीवण=साग–सब्जी, लगावण। भंभाभोळी=चकरावणौ। ललूलसा=चापलूसी। सरमोख=संतोख। ऊपरछाळा=ऊपरा–ऊपरी। राछ=औजार। त्रिसां=तिरसौ। दोपैर–दोफारौ। आखा=सगळौ। संप=मेळ। ठम जावै=रुक जावै। सुवास=सुगंध, सौरम। माटी=चीकणी माटी। मांटी=धणी। पैड़ा=चक्का। भरतार=धणी। नचीत=चिंताविहूण, नचींतौ। वासण=ठांम। सांध ै=जोड़ै। पांख=पंख। पूठ पाछै=लारै, परपूठ। डांवळै=डावै। अंवळी=आंटी, आंकी=बांकी। संवळी=सीधी। धरापत=धरतीपति। चौसठ घड़ी=दिन रात। सीयो चढ़ जावै=सरदी लाग'र ताव आवणौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा

1 किस्तुरी री सौरभ नै भी उड़ाय नाखै–

(अ) हींग (ब) लसण

(स) कपूर (द) चंदन

( )

2. 'दीवटिया रै साथै–साथै अंधेरै ज्यूं' राज पुरखां रै साथै चालै–

(अ) परधान (ब) कोटवाळ

(स) फोजदार (द) चमचौ

( )

3. चाटू किण भांत रौ निबंध है–

(अ) काल्पनिक (ब) विचारात्मक

(स) भावनात्मक (द) ललित

( )

4. महादेव भस्मी कड़ौ किणनै राजी हुय'र दियौ–

(अ) भस्मासुर नै (ब) बाणासुर नै

(स) रावण नै (द) कंस नै

( )

साव छोटा पडूतर वाळा

1. भोळा मिनख किणरै बारै में कोनी जांणै?
2. मोटा मिनखा री थळी जाय मुजरौ कुण करै?
3. दीवटिया रै साथै–साथै कांई चालै?
3. कोयल री इज आव–भगत क्यूं होवै?
4. भस्मी रा कड़ा सूं डरतां कुण लुकतां फिरयां?

छोटा पडूतर वाळा सवाल

1. चाटू चालै जद कुण मिल'र उठानै विदा करै?
2. 'पांणी पैळी पाळ बांधणौ' मुहावरै रौ अरथ लिख'र वाक्य में प्रयोग करौ।
3. 'जितरा मूंडा उतरी बात।' ओळी रै अरथ रौ खुलासौ करौ।
4. लेखक मुजब खरौ चाटू कुण कहीजै?

लेखरूप पडूतर वाळा सवाल

1. चाटू बाबत आम लोगां री कांई धारणा है? निबन्ध रै आधार माथै खुलासौ करौ।
2. लेखक चाटू रै सुभाव अर वचन मांय कांई फरक बतायौ है? बतावौ।
3. "चाटू कर्म सूं नी वचन सूं जीवा–जूंण पूरी करै।" आप इण कथन सूं कठै तांई सैमत हौ?
4. 'चाटू' निबन्ध री भासा–सैली री विसेसतावां नै दाखला देय'र उजागर करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) चाटू नीं चाकी चलावै, नीं खेत कमावण जावै, नीं माटी भरी काठड़ी उठावै, नीं पाळौ पग उठावै, नीं लूखौ खावै। आखै दिन काम रै नांव सूं फळी ईज नीं फोड़ै। बस बातां रा बिणज बिणजै नै लाखां रा वारा–न्यारा करै। मोटा मिनखां री थळी पर जा मुजरौ करै। साच नै कूड़, कूड़ नै साच कैयनै उणां रा मन भरमावै। बस, फेर छत्तीस बिजनां रा भोग भोगै, नचीत मल्हार गावै।

(ब) चाटू नै चाटू कैवणौ नै ऊजड़ बैवणौ बरोबर। अंवळी री संवळी नै संवळी री अंवळी करणी चाटू रै डांवळै हाथ रौ खेल गिणीजै। कोई चाटू री करणी माथै रीसां बळै तौ लाख बळौ, औ तौ चाटू रौ सुभाव है कै इण तरफ रा भाखर उण तरफ नै उण तरफ रा डूंगर इण तरफ धर देवणा।

निबन्ध
भेळप, सैंणप अर भाईचारौ

मूळदान देपावत

निबन्धकार–परिचै
मूळदान देपावत रौ जनम बीकानेर रियासत में करणी माता रै जगचावै मिंदर वाळै तीरथ देशनोक (बीकानेर) में 2 फरवरी, 1943 में होयौ। साहित्य–सेवा रा संस्कार वांनै परिवार सूं मिळ्या अर राजस्थानी साहित्य रचना रौ चाव बाळपणै सूं ई रैयौ। वै राजस्थान शिक्षा विभाग में वरिष्ठ अध्यापक हा। आपरी रचनावां सिरजण, कूंपळ, हिवड़ै रौ उजास, माणक–चौक, मोती–मणिया, ओळखाण आद संकलनां में छपी। मरुभारती, माणक, जागती जोत अर दूजी पत्र–पत्रिकावां मांय आपरा राजस्थानी निबन्ध लगोलग छपता। आपरा दो निबन्ध–संग्रै 'बुगचो' अर 'बळिहारी उण देसड़ै' राजस्थानी निबन्ध साहित्य री धरोड़ मानीजै। आपरै निबन्ध–संग्रै माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रौ गद्य पुरस्कार मिळ्यौ। आप 'मां करणी' अर 'बीकानेर पंच शताब्दी स्मारिका' रा सह–सम्पादक रैया।

पाठ–परिचै
मूळदान देपावत री निबन्धां री पोथी 'बुगचौ' मांय संकलित निबन्ध 'भेळप, सैंणप अर भाईचारौ' मांय आपणी आदू भारतीय संस्क्रति रौ बखाण करीज्यौ है। अठै री संस्क्रति आत्मसात करण री संस्क्रति है। जठै अेक–दूजै रै धरम नै आदरीजै। अठै सत्य, ईमान, परोपकार नै धरम बतावै अर झूठ, निंदा, दुराचरण, बुराई नै अधरम मानै छुआछूत भारतीय समाज–व्यवस्था माथै कळंक है। भगवान राम सबरी रै अैंठोड़ा बोरिया अर सांवरियै केळा रा छूतका खाधा। वै भी भेदभाव नीं राख्यौ तौ पछै आपां क्यूं बरतां। इण समाज में शिक्षा रै प्रभाव सूं कोजी कुरीतां कम तौ होय रैयी है, पण दूजी कुरीतां आपरा पग पसार रैयी है। अठै सगळा अेक–दूजै रा तिंवार सागै रळ नै मनावै। लोगां री भावना, साम्प्रदायिक सद्भाव, अंजसजोग अर बखाणै जिसौ है। आज री युवा पीढी मांय बापरयोड़ी नसै री कोजी लतां वांनै कुमारग माथै ले जा रैयी है। आम आदमी धरम–सम्प्रदाय रै रगड़ा–झगड़ा सूं अलायदा हुय'र प्रेम, सौहार्द, आदर, सद्भाव सूं रैवै अर अेक–दूजै री अड़ी में आडा आवै। आज आपां अेकमन होय'र चालां तौ देस निस्चै ई उन्नति करैला। इण कारण साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय अेकता अर अनुसासन रै साथै आ भावना जरूरी है कै 'हम सब भारतीय हैं' अर 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'।

भेळप, सैंणप अर भाईचारौ

मिनखां सूं समाज बणै। मानव रै संबंधां, समाज री मानतावां, रूढियां अर परंपरावां री पाळणा में कुटुम्ब–कबीला, जाति–व्यवस्था अर रीत–पांत बणी। गांव करै ज्यूं गैली नै भी करणौ पड़ै। सदियां सूं चालती परंपरावां दौरी छूटै, पण बखत रै साथै बदळाव भी आवण लागै। आज दुनिया में आपसी भाईचारै अर सद्भाव री घणी जरूरत है। इण आरथिक जुग में आपाधापी, सुवारथ, होड, होय धन हाय धन री बुराइयां रै कारण सद्भाव रै सुंदर महल रै खंजण री चिंता समझवानां नै सतावै। आपणै बडेरां रै हेतप्रेम सूं सींच्योड़ौ भलपण रौ वटवृक्ष आपसी मतभेद, ओछी मानसिकता अर छोटा–छोटा सुवारथां री उदेवळ सूं खोखलौ नीं हुवै, निंगै राखणी जरूरी है।

आपणी आदू भारतीय संस्कृति भांत–भंतीली संस्कृतियां रौ मेळ है। आपणी संस्कृति आत्मसात री संस्कृति है। अठै जो भी आयौ, अठै रौ बणग्यौ। आयोड़ा, जायोड़ां सूं बत्ता लागै। भारत री फुलवाड़ी में भांत–भांत रै फूलां सूं सोभा है। अठै अनेकता में अेकता है। इणरै मूळ में वर्ण–व्यवस्था अर जातिप्रथा रौ प्रभाव सांपरतेक लखावै। न्यारी–न्यारी जातियां रा धरम, करम अर रीति–रिवाज न्यारा–न्यारा। अेक दूजै रै धरम रौ आदरभाव बडी बात है। इण सूं जात– बिरादरी, धरम रै नाम माथै भींतां नीं खंचै। भेळप अर भाईचारौ बणियौ रैवै। सगळा धरमां री आछी बातां नै मानणी। सगळा संत, महात्मा, औलिया पुरुष मिनख रै भलै री ही शिक्षा देवै। वै सत्य, ईमान, परोपकार नै धरम बतावै अर झूठ, निंदा, दुराचरण, बुराई नै अधरम मानै मिनखां में कोई ऊंचौ–नीचौ नीं हुवै। विचारां, आचरण सूं मिनख री पहचाण हुवै। भलै री बात सोचै, विचारै वौ भलौ आदमी अर ओछा विचार राखै, हळका काम करै, दूजां नै पीड़ा पौंचावै वौ माड़ौ आदमी।

छुआछूत भारतीय समाज–व्यवस्था माथै कळंक है। मिनख, मिनख में इतरौ भेदभाव? अेकै कांनी उपदेस दिरीजै कै काम रौ कांई हळकौ, काम री कांई सरम? अर दूजै कांनी हळका काम करणै वाळां री जातियां नै हळकी बतावै। वै नीची मानीजै, वांरी बस्ती अलायदी बसै। वांनै पांणी भी ऊपर सूं पाईजै। भेळौ हुयां गंगाजळ रा छांटा लिरीजै। वै भगवान रा दरसण नीं कर सकै। आ प्रथा कुण चलाई? मिनख ईज तो चलाई, नींतर भगवान राम तौ सबरी रै अैंठोड़ा बोरिया खाधा। भाव रै भूखै सांवरियै केळां रा छूतका जीम लीना। जगत रै भलै सारू महादेव हळाहळ पी लीनौ। थे वां रै पग री होड कर सकौ? पछै आ भेदभाव क्यूं? सबां रौ खून अेक सरीखौ, सब उण परमपिता री संतान, मिनख–मिनख सब अेक है। जलम रै संजोग कोई नै आछौ जमारौ मिळग्यौ, वौ सुख पावै। कोई रै आखी ऊमर पचणौ पांती आयौ। पण इण सूं कांई? बडौ तौ बडा काम करियां ईज बणै। बाल्मीकि, कबीर, रैदास, नामदेव रा लोग गुणगान करै। हिरणाकुस, कंस, रावण घणाई राजा हा नीं, वांनै कोई पूजै? इण वास्तै पापी सूं नीं, पाप सूं घिरणा करौ। भेदभाव मत राखौ, छुआछूत घोर अपराध है, पाप है। जद राज अर समाज दोनूं इण बात नै समझैला, शिक्षा री जोत जगैला, ज्ञान रौ चांनणौ पसरैला तद भेदभाव, छुआछूत जड़ामूळ सूं जावैला।

शिक्षा रै प्रसार सूं बाळविवाह, पड़दा प्रथा, विधवा–बिखी, औसरप्रथा, नाता वगैरह कुरीतां तौ कम हो रैयी है, पण दूजै कांनी दहेजप्रथा रा पग पसरण लाग्या है। इण डाकी दायजै सूं कीकर पार लंघीजै? मुद्दो, टीको, दायजो

मांगतां लोगां नै ओळज ही नीं आवै। कन्यावां री भणाई–पढाई सूं जरूर थोड़ौ–घणौ आंकस लाग्यौ है। शिक्षा अर समाज रै प्रभाव सूं अंतरजातीय विवाह भी हुवण लागा है। जागृति री जरूरत है, कोई अबढौ काम नीं है। करणै सूं सब हुवै। आज सतीप्रथा, बहुपत्नीप्रथा उठगी का नहीं, पड़दा प्रथा भी मौळी पड़गी है, पछै अै दूजा लपचेड़ा भळै क्यूं राखौ, पापौ काटौ नीं। आपणै अठै बखांण दिरीजै कै परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। मन, वचन अर करम सूं प्राणीमात्र नै ठेस पहुंचाणी पाप है। गरीब, भूखै, दीन–दुखी री सेवा में सुख मिळै। मिनख रौ धरम है मिनखपणौ अर मिनखपणौ वौ है जिकै सूं मांनखै रौ भलौ भरीजै। प्रवचन, उपदेस रै सर में आ ईज शिक्षा आम आदमी रै हिंयै ढूकै जणै वौ सोचै अर समझै। आम आदमी धरम भीरू व्है, आपरै इष्ट रौ नाम सिंवरै, पूजा पाठ करै, नमाज पढै, व्रत–उपवास करै, रोजा राखै। सगळा उण मोटै मालक रा गुणगान करै। सूरदास, मीरां, रसखान, रहीम रा पद–भजन जन–जन में चावा है। सगळा आपरा भजन, कीर्तन, सबदपाठ, मिलाद करै। कबीर री बाणियां गावै, भक्तिभाव खास राखै। रामदेवजी, गोगैजी नै मुसळमान पीर मान'र धोकै, ध्यावना राखै। ख्वाजा साहब रै दरबार हिंदू हाजरी बजावै जियारत करै। सगळा पीरजी री मजार आगै सूं नीसरता झुकै, सिलाम करै अर मिंदर आगै सूं हाथजोड़ नीसरै। होळी–दियाळी रामा–स्यामा करै, ईद मुबारकबाद देवै। हांती–पौळी भेजै, परसादी पावै। अेक–दूजै नै जैमाताजी री, सलाम वालेकुम, सतश्री अकाल अभिवादन करीजै। आपस में सुख–दुख रा सीरी बणै। लोगां री भावना, सांप्रदायिक सद्भाव अंजसजोग अर बखांणै जिसौ है।

समाज में सगळा धरम, समुदाय, जातियां रा लोग भेळा बसै। अेक–दूजै रै काम पड़ियां मददगार बणै। सभी लोगां रा अेक ठौड़ रा रीति–रिवाज अेक जैड़ा, पैरावौ, खानपान अेक जैड़ौ। निरा लोगां में तौ जातियां, उपजातियां रा नाम भी अेक जिसा। गीत अेक जैड़ा, गाळ अेक जैड़ी। गीतां री ढाळ अर संवेदना में कठैई फरक नीं। गांवां में नुंई बीनणी नै दूजै समुदाय रै खोळै घालण रौ दस्तूर करीजै। बठै उणनै पीहर रौ लाड–प्यार, वातावरण मिळै। बाळविवाह समाज री बुराई है, हिंदू, मुसळमान सबां में है। सामाजिक रूप सूं पिछड़ां में घणी है। काचा सूत पळेटीजै, छोटा थकां रा निकाह पढीजै। पाप रा भारा बांधै, गुनाह करै। रमण–खेलण री औस्था में घूंघटौ काढीजै। पड़दै रौ रोग भी सबां रै है। बेमेळ विवाह अर दूजी अबखायां पैदा हुवै। बेटी परायौ धन मानीजै, धोरै चाढीजै। टाबरां रा हाथ पीळा करण री चिंता अर पोतै–पड़पोतै रौ मूंडौ देखणै री चावना में आखातीज रै सावै हजारूं चंवरी मंडै। शिक्षा में पिछड़ैपणै, धार्मिक रूढिवादिता, कृषि प्रधानता, संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली अर दूजा आर्थिक सामाजिक कारणां सूं आ प्रथा जीवित है। जाबक टाबरां नै थाळी में बैठांण परणावै। भगवान ना करै, काई किसी हुय जावै तौ आखी ऊमर रंडापौ भुगतणौ पड़ै। सामाजिक रूप सूं पिछड़ी जातियां में नाताप्रथा, रीत अर अट्टौ–सट्टौ चालै। समाज में चेतना बिना कानून–कायदा सौ कीं फिजूल है। पिछड़ैपणै रौ अेक कारण औसर–मौसर अर नुक्तौ है। टाबरां रौ मूंडौ ऊजळौ करण में घर धोय धोळौ कर नांखै, करजै सूं कळीजै जकौ अलायदौ। जीवतां भरपेट राबड़ी मत मिळौ, पण अेक दिन रै जीमण में आखी ऊमर रौ कचूमर काढ नांखै। आथूणै राजस्थान में मरणै–परणै अमल घणौ ऊपड़ै। सीमाई इलाकां रै चुणावी उम्मीदवारां रै मनवारां– मनवारां में

कूंटळ अमल लागण री खबरां छापां में छपै। आजकालै नसौ करणौ भी फैसन बणग्यौ है, सगळी जातियां रा लोग करै। नसौ च्यारूंमेर फिरग्यौ। युवा पीढी में हैरोइन, चरस, गांजा, मैंड्रेक्स अर दूजी नसै री गोळियां रौ चलन बधग्यौ। बीयर पीवणौ पईसां वाळां रौ सगल, जनाना सिगरेटां भळै बापरगी बतावै। देखादेखी साजै सौख, छीजै काया, बधै रोग। अबै किसै खाडै में पड़ां? मरै बापड़ौ गरीब, उणरी कोई जात–पांत, धरम नीं हुवै। मिनख, मिनख व्है। भेदभाव री जड़ां है कठै?

आम आदमी खेतीखड़, मजूर, करसौ है। वौ मतभेद, धरम–संप्रदाय रै रगड़ां–झगड़ां में नीं समझै। वौ जीमण री थाळी न्यारी भलां ई राखौ, मन न्यारा नीं राखै। मन मिळियां तौ प्रेम, सौहार्द्र, आदर, सद्भाव बधै। मेळा, कतारां सगळा लोग साथै जावै। भेळौ भोजन बणै, भेळा ही जीमै। पग में छोटौ व्है वौ थाळी मांजै। खेत खळां में अड़सी–बड़सी करै। अड़ी–बड़ी में ओधारौ साजै, सुख–दुख रा सीरी बणै। नादारगी, नैनप, थाकेलौ कोई रै भी हो सकै। हळसोड़ै में हळ बावण री मदद करै, ल्हास में आपरौ काम खोटी कर परा'र भी जरूर जावै। सगळी जात–बिरादरी रा लोग सैयोग करै। तीज–तिंवारां, गणगौर, उर्स माथै उछाव सरावणजोग है। भेदभाव, झगड़ै री बातां आम आदमी नीं करै। बियां तौ देखौ मा जाया भाई भी लड़ै पण राजनीति रै रगड़ां, दंगाफसाद में बापड़ौ गरीब मरै, उणरा टाबर रुळै। इणरी चिंता किणनै है? कांई साचांणी लोग इयां लड़ै–भिड़ै? अैड़ी खबर माथै पतियारो नीं हुवै। अठै तौ खेत ढांणी भी जावै तौ लारै संदूक–पेवटी पड़ौसी नै संभळा'र जावै। गांव–गांवतरै जावै तौ गाय भैंस दुहारी, टाबरां री भौळावण देय जावै। आ तौ कदैई नीं बिचारै कै पड़ौसी किण जात रौ है? किसै धरम रौ है? वै तौ उणनै भाई–बंधु, काका–बाबा ई जाणै। सब अेकल हां, पछै भेदभाव है कठै? दुभांत है कांयरी? बांटणौ कांई है? कीं समझ में नीं आवै।

आज रै हालात माथै विचार करां तौ अमूझणी आवै। सामाजिक अर नैतिक मूल्यां में गिरावट अर संकीर्ण विचारधारा रै ओछापणै सूं आव–आदर घटै। अेकै कुटुम्ब रा ईज जद भेळा नीं खटै तौ पछै दूजै कबीलै वाळां सूं कांई आस राखीजै। धड़ौ–कड़ूंबौ, जात–बिरादरी, समाज री तौ पछै चींतीजै। अेक दूजै में फरक समझै जणै मनां में फरक पड़ै। मनां में फरक आयां फंटवाड़ौ पड़ै अर फंटवाड़ौ हुयां विरोध पनपै। देस रौ हांण हुवै, प्रगति थम जावै, विकास रुक जावै। संपत हुयां सुख सोमती रहै, घर फाटां उजाड़ हुवै। जाति, धरम, भासा रै नाम माथै पाळा मंड जावै। विरोध बधण लागै अर घृणा पनपै। इणनै ओछै सुवारथ री हवा लागै। देस अर समाज री नीं सोचै जणै बिगाड़ हुवै। बोल बिगाड़ा लोग हवा बिगाड़ देवे, कोई दुसमी जगतौ पूळौ नांख दै। लाय में आला–सूका सैंग बळै। समाचार सुणीजै– फलांणी ठौड़ झगड़ौ–दंगौ हुवौ है, सरकारी अर निजी संपत्ति नै नुकसाण पूग्यौ है, कर्फ्यू लाग्यौ है। कानून व्यवस्था वास्तै पुलिस, सेना री टुकड़ियां तैनात करीजी है। अबै सोचौ कै आं बातां सूं देस रौ कितरौ हरजानौ हुवै, कितरौ धन लागै, कितरा विकास रा काम प्रभावित हुवै? हड़तालां, बंद वगैरह सूं कितरा गरीब मजूरी बिना रहै, हिंसा में कितरा लोग अनाघात मारीजै, कितरा परिवार तबाह हुवै, इणरौ जबाब किण कनै है? राज या समाज कोई इणरी पूर्ति कर सकै? जठै बीतै अर जिकै में बीतै वौ ईज जाण सकै है। इण चिंता री चिंता करणी जरूरी है।

आपां इण देस रा जिम्मेदार नागरिक हां, आ बात हिंयै में उतारौ तौ बात बणै घाई–घुत्ती,

फिरका–परस्ती सूं तौ भलौ भरीजै नहीं। वैर, विरोध, भेदभाव देस री तरक्की वास्तै घातक है। देस सूं बडौ कोई नीं है, देस नै सबसूं ऊंचौ समझौ। जे देस अर आजादी माथै आंच आई तौ पछै औ जलम अकारथ ईज जाणौ। आपणौ जीवण आपणै देस खातर है। आज सद्भाव, सैयोग अर अेकता री जरूरत है। इतिहास साखी है कै जद–जद इण देस रै वासिंदां में फूट पड़ी है, फांटौ पड़ियौ है तौ पराधीनता भुगती है। जद अेकजुट होय आगै बधिया है तौ देस आगै बधियौ है। आजादी री लड़ाई में भारत माता रै सपूतां जद अेकता धारली तौ पछै देस नै आजादी मिलतां जेज कांई लागी? इण घणमोली आजादी नै आपां नै संभाळ'र राखणी है। अनेकता में अेकता इण देस री महान परंपरा रैयी है, अठै सगळा रळ मिळ'र बसै। सरवधरम समभव अठै री खासियत है। आम आदमी में सद्भाव अंजसजोग है। आपां नै इण सद्भाव नै कायम राखणौ है अर इण सद्भाव नै मिटावण वाळी कुचेस्टावां नै पाछी नांखणी है। देस री उन्नति में ईज आपणी उन्नति है। देस आपणौ है अर सगळा देसवासी आपणा भाई है। इण भाईचारै नै कायम राखणौ है। साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय अेकता अर अनुशासन रै साथै आ भावना जरूरी है कै 'हम सब भारतीय हैं' अर 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

बडेरा=पूर्वज। निगै=ध्यान, रुखाळी। भींतां=दीवारां। अलायदी=दूर, अेक तरफ। अैंठोड़ा=झूठा। छूंतका=छिलका। हळाहळ=ज्हैर, विस। चानणौ=उजाळौ, उजास। ओळज=लाज,सरम। आंकस=अंकुस, अनुसासन। मौळी=कमजोर। सीरी=भागीदार, बेली। भेळा=साथै। कूंटल=क्विंटल। अमूझणी–जी घबरावणौ, रोसीजणौ। हांण=नुकसाण। दुसमी=सत्रु, बैरी। अनाघात=बेमौत। वासिंदा=रैवासी, वासी। जेज=मोड़ौ, अबेळौ। अंजसजोग=गुमेज करणजोग। जहां=जगत, दुनिया।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. आज रै जुग मांय किसी कुरीत घणा पग पसारण लागी है–
   (अ) दहेज प्रथा (ब) औसर प्रथा
   (स) पड़दा प्रथा (द) बाल ब्यांव
   ( )

2. निबन्धकार मूळदान देपावत री जलमभोम है–
   (अ) देसनोक (ब) मथानिया
   (स) बिराई (द) देवगढ़
   ( )

3. निबन्धकार दुभांत नै कांई बतायौ है–
   (अ) बहादुरी (ब) कायरी
   (स) वीरता (द) सैणप
   ( )

4. भारत री संस्क्रति किण भांत री संस्क्रति है?
   (अ) रंग–रंगीली (ब) भांत–भंतीली
   (स) आत्मसात वाळी (द) ऊपरला तीनूं
( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. युवा पीढ़ी में किण बात रौ चलण बधग्यौ है?
2. "हाथ पीळा करणा" मुहावरै रौ कांई अरथ है?
3. महापुरुसां रा आज भी लोग गुणगान क्यूं करै?
4. कांई "बेटी नै परायौ धन" केवणौ वाजब है?
5. आपणै देस री कांई जबरी परंपरा रैयी है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आज दुनिया में किण तरै री भावना घणी जरूरी है?
2. शिक्षा रै प्रसार सूं किण–किण सामाजिक कुरीतां रौ निवारण कर्‌यौ जाय सकै है?
3. "बडौ तौ बडा काम कर्‌यां ईज बणै।" इण कथन रौ खुलासौ करौ?
4. ल्हास में आपरौ कांम खोटी कर परा'र भी क्यूं जावै?

लेखरूप पडूतर वाळा सवाल

1. "समाज में चेतना बिना कानून कायदा सब फिजूल है।" निबन्ध रै आधार माथै इण कथन री व्याख्या करौ?
2. "देस री उन्नति में ही आपणी उन्नति है।" इण कथन नैं ध्यान में राखता थकां जिम्मेवार नागरिक रै फरज रौ बखाण करौ?
3. "आज रै हालात माथै विचार करां तौ अमूझणी आवै।" निबन्ध रै आधार माथै इण ओळी री विरोळ करौ।
4. लेखक 'भेळप, सैणप अर भाईचारौ' निबन्ध में आपणी संस्क्रति नै किण भांत उजागर करी है?
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आपणी आदू भारतीय संस्क्रति भांत–भंतीली संस्क्रतियां रौ मेळ है। आपणी संस्कृति आत्मसात करण री संस्क्रति है। अठै जो भी आयौ, अठै रौ बणग्यौ। आयोड़ा, जायोड़ां सूं बत्ता लागै। भारत री फुलवाड़ी में भांत–भांत रै फूलां सूं सोभा है। अठै अनेकता में अेकता है।

(ब) परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। मन, वचन अर करम सूं प्राणीमात्र नै ठेस पहुंचाणी पाप है। गरीब, भूखै, दीन–दुखी री सेवा में सुख मिळै। मिनख रौ धरम है मिनखपणौ अर मिनखपणौ वौ है जिकै सूं मांनखै रौ भलौ करीजै।

(स) आपां इण देस रा जिम्मेदार नागरिक हां, आ बात हिंयै में उतारौ तौ बात बणै घाई–घुत्ती, फिरका–परस्ती सूं तौ भलौ भरीजै नहीं। वैर, विरोध, भेदभाव देस री तरक्की वास्तै घातक है। देस सूं बडौ कोई नीं है, देस नै सबसूं ऊंचौ समझौ। जे देस अर आजादी माथै आंच आई तौ पछै औ जलम अकारथ ईज जाणौ।

निबन्ध
राजस्थान री लोककलावां

डॉ. महेन्द्र भानावत

लेखक–परिचै

डॉ. महेन्द्र भानावत रौ जनम उदयपुर जिलै रै कानोड गांव में होयौ। जद आप टाबर हा, आपरा पिता श्री प्रतापमलजी सुरगवासी होयग्या। आपरी माता श्रीमती डेलूबाई घणी हिम्मत राख'र आपरौ लालन–पाळन कर आपनै पढाया–लिखाया। आपरी सरूआत री शिक्षा जवाहर विद्यापीठ, कानोड अर जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी में होयी। पछै आप बीकानेर रै सेठिया जैन छात्रावास में रैय'र बी. अे. करी अर बाद में नौकरी करता थकां महाराणा भूपाल कॉलेज उदयपुर सूं अेम. अे. हिन्दी अर उदयपुर विश्वविद्यालय सूं 'राजस्थानी लोकनाट्य परंपरा में मेवाड़ रो गवरी–नाट्य अर उणरौ साहित्य' विषय पर पीअेच.डी. री उपाधि हासल करी। आप भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर में उप निदेशक रैया। लेखक लोक–साहित्य अर लोककलावां रा मानीजता विद्वान अर गवेषक है। सरू में आपनै लिखण री प्रेरणा आपरा बडा भाई डॉ. नरेन्द्र भानावत सूं मिळी। अबार तांई देस री केई पत्र–पत्रिकावां में आपरा 300 सूं बेसी आलेख छप चुक्या है। क्षेत्रीय अनुसंधान अर संपादन में भी आपरी खास रुचि रैयी है। आप मासिक पत्रिका 'रंगायन' अर छमाही शोध–पत्रिका 'लोककला' रा संपादक है। डॉ. भानावत री केई पोथ्यां छप चुकी है, जिणां में प्रमुख है– लोकनाट्य परंपरा और प्रवृत्तियां, लोकरंग, लोकनाट्य गवरी, देवनारायण रौ भारत, लोकदेवता तेजाजी, मेवाड़ के रासधारी, ताखा अंबाव रो भारत, राजस्थान के तुररा–कलंगी, रामदळा की पड़, काळा–गोरा रौ भारत, राजस्थान के रावळ, राजस्थान की भवाई लोककला : मूल्य और संदर्भ, मेहंदी रंग राची, राजस्थान की रम्मतें, ब्रजराज काव्य माधुरी, राजस्थान स्वर लहरी आद।

पाठ–परिचै

पोथी रा निबंध राजस्थान री लोककलावां री आछी ओळखाण करावै। लोककलावां री दीठ सूं राजस्थान केई मायनै में दूजा प्रांतां सूं हरावळ है। अठै री देव मूरतां, पड़ां अर कावड़ां तौ परदेसां में भी जबरौ नांव कमायौ। अठै री सांझी कला आपरौ न्यारौ ई कलात्मक सरूप राखै। वार–तिंवार माथै तौ ढांडा–ढोर तक अठै कलामयी जीवण जीवै। अठै रौ गरीब सूं गरीब आदमी ई आपरै घर–आंगणै नै कोर्‌यां–सिणगार्‌यां बिनां नीं रैवै। इण कला रै छेत्र में अमीर–गरीब रौ कोई भेद नीं है। आ कला कठैई भेद रेखा नीं खींचै। आ अंतस सूं अंतस जोड़ै, हिवड़ा खोलै। इण कलावां रै पाछै सुभाग, आस्था अर रिद्धि–सिद्धि रा जबरदस्त भाव जम्योड़ा है। इण खातर हरेक आप–आपरै मतै सूं आंनै पूजै सरावै अर सम्मान देवै।

राजस्थान री लोककलावां

सूरां अर संतां रै देस सरूप राजस्थान घणो नामी अर जोगो कहीजै। पण लोगां नै आ ठा कोनीं कै लोककलावां री दीठ सूं भी ओ उत्तो ईज रूड़ौ–रंगीलौ, लूमौ–झूमौ अर रिद्ध–सिद्ध रो रंगरेज है। लोककलावां उत्ती ही पुराणी है जित्ती पुराणी मिनख री सभ्यता। घणाई पुराणा जमाना सूं मिनख आपरै हिरदै रै उमावां नै रंग–रोगन सूं कोर'र तरै–तरै रा भांत–भंतावण अर रूप–रूपावण देवतौ रैयौ है। टाबरां रा टपरा अर घरौंदा सूं लेय'र बडा–बूढां रा घा–कोठा तक में लोककलावां रा लाला–मोती देख्या जाय सकै। आं लोककलावां रो वरगीकरण इण भांत सूं कर्यौ जाय सकै–

1. वास्तुकला, 2. चित्रकला, 3. मूर्तिकला, 4. मांडणा, 5. थापा, 6. पड़कला, 7. गूदणां, 8. मैंदी, 9. काष्ठकला, 10. भांत–भांतीली कलावां।

वास्तुकला

राजस्थानी लोकजीवण में लोकदेवता री मानमनौती अर आस्था घणी जबरी है। इण वास्तै आं रा देव मन्दिर भी केई तरै री कारीगरी सूं बणाया जावै। बेंतरा छाजा, अगर री लकड़ी रा चौगटा अर चंदन रा किंवाड़ अर वांरी बणगट अर कारीगरी असी करी जावै कै जिणरौ कोई मोल नीं आंक्यो जाय सकै। देवळ–मिंदर ई क्यूं, आपणै रैवा आळा बंगला भी घणाई कलात्मक ढंग सूं बणाया जावै। लांबा–लांबा बांसड़ा नै चीर'र बेंत रा चिकणा अर पतळा भाग सूं आंनै बांध्या जावै अर पान'र आत रा माना सूं उणरौ छपर छवायौ जावै। मोटा लोग बजर कंवाड़ां री मेड्यां बणवाय'र लकड़ी रा केई तरै रा बारीक काम रा गोखड़ा बणवावै। मेवाड़ी ख्यालां में भी राणीजी सारू बांस–बल्यां रौ बंगलौ त्यार कर्यौ जावै, जिण मांय सूं टेरा देवता थका राणीजी नीचै उतरै। तुर्राकलंगी ख्यालां में अट्टालीनुमो आलीसान मंच बणायौ जावै। मंच माथै बीस–बीस फुट तांई ऊंची अट्टलिका बांधै ज्यांनै रंग–बिरंगी फरियां, कोर किनार्यां अर कपड़ा–लत्तां सूं सिणगारी जावै। आं अट्टालिकां नै झरोखा अथवा म्हैल भी कैवै। राणी पात्र अणी अट्टालिकावां बणाई जावै।

चित्रकला

चित्रकला में खास तौर सूं भींता परला चित्रां रौ घणौ महत्त्व है। सबसूं घणा चितराम ब्याव–शादियां पर मांड्या जावै। आं चित्रां में तोरणद्वारे हाथी, घोड़ा, ऊंठ, छड़ीदार, चंवर ढोळती अर आरती करती लुगायां, घर में भींतां पर लिछमीजी, गणेसजी, पतंग उडावतौ थकौ छोरौ, भौजाई रै डावा पग रौ कांटौ काडतौ थकौ देवर, घट्टी फेरतौ थकौ व्याई अर मूसळ चलावती व्याण, मुगदर घुमावतौ पैलवान, पाणी में न्हावती गोपियां अर उणां रा गाभा चुरावणिया बांसरी बजावता किसनजी जस्यां रौ जाणै कमेरौ उमड़ पड़ै। इण चित्र पांडउ पूती भींतां पर नारेळ री काचल्यां या गायां रा सरावाळ्या में भांत–भांत रा रंग त्यार कर खजूर री डाळी री कूंची सूं कोर्या जावै। रंगां में रचका नै पीस'र लीलौ, हळदी में नींबू न्हाख'र रातौ, डाडम रा छोंतरां नै उकाळ'र पीळौ, हीराकसी अर काजळ सूं काळौ, थपड़्या में डाडम रो छोंतरा भेळा अर मूंगीयौ रंग त्यार कर्यौ जावै। अै रंग इस्या पक्का अर गैरा होवै कै केई बरसां तक नीं तौ भींतां सूं ऊतरै अर ना मगसा पड़ै। अबै तौ केई रंग अर केई ब्रुश सब बणावणिया मिल जावै, इणी वास्तै चितारै (चित्रकार) नै किणी बात री माथाफोड़ी नीं करणी पड़ै।

मूर्तिकला

लोक कलाकार मूर्तियां बणावां में बडो

चतर होवै। लकड़ी, पत्थर, माटी अर धातुवां री केई तरै री देवी–देवता अर दूजा जीवां री मूर्तियां अर खेल–खिलोणा घणाई मन लुभावणा लागै। आं में माटी री मूर्तियां री कला घणी सरावण जोग है। काळागोरा सूं लगाय'र ताखाजी, धपरमपाज, लालांफूलां, आमजमाता, रंबारीदेव, नारंसिघी खाकल, सांडमाता, खेतरपाळ, पीपळाज, कूकड़ामाता अर काळका माता री हिंगाणा गांव–गांवां रै देवरा–देवरा में थरपी जावै। केई लोग देवी–देवतावां रा नांव बणा'र आपरै गळा में बांधै।

मांडणा

आंगणै पर जिका चितराम मांड्या जावै वै मांडणा कहीजै। मांडणा मांडवा पैली आंगणा नै गोबर–पीळी सूं लींपी–चूंपी नै साफ–सुथरी बणायलै पछै आधा सूख्या अर आधा आला आंगणा पर लुगायां रूई रा फोया नै पांडू रै पाणी में बोल नै आपणी देवळ पूजणी आंगळी सूं मूंडै बोलता मांडणा मांडै। कोई वार–तिंवार हुवौ, मांडणा तौ अवस करनै मंडीजैला। बिगर मांडणा आंगणौ भूंडौ लागै अर खावा नै दौड़ै। आं मांडणां में दीवाळी माथै सोळा दीवा, चोक, बीजणी, पान, डाका, पगल्या, फूल, हीड, ताकड़ी, सांठा, पावडी सात्या, रथ, जळेबी, मुरकी नै गायां रा खुर, होळी रा चंग, खांडा, घेवर, ढोलकी नै कंवळ रौ फूल, तीज्यां गणगोरयां पर चौपड़, गौर रो बेसर नै गुणां, मांडा–सादी पर सीतळा माता, गळीचौ अर फूलड़यां अर ब्याव पछै पैलीपोर, लाडी जद आपणा पीयर सूं सासरै आवै तो वीं दिन भी सुभ सकून रा चौक, फळ, सात्या अर आंरै आजू–बाजू नाना–नाना दीवा, कुलड़यां, झाड़, वाटका, चीडा–चरकला नै जळेब्यां मांडी जावै। कैवत में कैवै कै कंवळ सूं ज्यूं पाणी री, फूल सूं ज्यूं धरणी री अर बरात्यां सूं ज्यूं ब्याव री सोभा व्है ज्यूं ई मांडणां सूं घर–आंगण री सोभा अर सुवाग गिण्यौ जावै।

थापा

हाथ री आंगळ्यां रौ थापौ देईनै उपरै जो चित्र कोरया जावै वांनै थापा कैवै। अै थापा कंकू, काजळ, हरद, हिंदूर, गेरू अर अेपण सूं बणाया जावै। लुगायां उणां थापा नै कोरनै आपरा वरत पूरा करै। करवा चौथ, चूरमा चौथ, राखी, नागपांचम, सीतळा सातम, होई आठम, दीयाड़ी नम, गणगौर अर दसा माता पर तरै–तरै रा थापा कोर नै वरत कथावां कहीजै। सरदा रै पूरै पखवाड़ै छोरयां आपणा बारणां माथै रौ दीवार अथवा हडमची री गोरी ऊपर गोबर सूं नित हमेस नुंवी–नुंवी संज्या कोरे अर बन्ने कनेर, कोलौ, हजारी नै छोरयां गुल रै फूलां सूं सिणगारै। अेकम सूं अेकताहरा सूं सरू हुयनै ई सज्या दसम तांई पांव–पछेटा, चांद–सूरज, वांदरवाळ, चौपड़, बीजणी, तिबारी, जनेऊ, निसरणी, वयाटका, खजूर, मोर, छाबड़ी अर पंखी रै भांत री संज्या मांडै। ग्यारस नै संज्या रो मोटो कोट गाळ्यो जावै जीं में संज्या री बरात अर नीचै जाडी जोधा, पातळी पेमा, गुजराणी, ढोली, भंगी अर उंदे माथै लटकतो थको खापरियौ चोर मांड्यो जावै।

पड़कळा

कपड़ा ऊपर चितराम मांडवा री अठारी भी जगजाहिर है। लोक जीवण में जे सूरवीर आपणा नेकी रै काम सूं देवळ रै रूप में थरपीजग्या वणा री जीवण लीला कापड़ा माथै मांडी जावै। आं देवां में पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी नै राम–लिछमण मुख्य है। कपड़ा रा ईज चितराम पडचितर कहीजै। साहपुरा–भीलवाड़ा रा जोसी लोग ई पडां बणावै अर आं पडां रा भोपा गांमा–गांमा गीत गाता अर नाच री संगत सूं रात–रात भर जगैरौ करनै आं में कोरया मुजब अेक–अेक चित्र रो उलथावणी करै। लोगां नै विस्वास है कै पड़ बंचायां पछै कोई भी पिराणी मांद मौत रौ सिकार नीं हुवै। अै पड़ां पचास–पचास हाथ तांई लांबी व्है। कपड़ा पर पछवायां कोरवा रौ

भी अठै जोरदार काम है। अै पछवायां वैष्णव मिंदरां में भगवान री मूरत पिछाड़ी लगाई जावै। पछवायां वणावां में नाथद्वारा रा कारीगरां री कोई होड नीं करी सकै।

गूदणां–मैंदी

सरीर ऊपरला मांडणा में गूदणां अर मैंदी मांडणा खासमखास है। आदमी रै मरयां पछै वीं रै सागै कोई धन–संपदा नीं जावै। अस्यौ विस्वास है कै गूदणा अर मैंदी ईज वीं रै सागै जावै। औ ईज कारण है कै हर आदिवासी लुगाई आपणा सरीर पर तरै–तरै रा गूदणां गूदावणौ आपणौ पैलौ धन–धरम समझै। गूदणां अर मैंदी दोई सुवाग रा चित्र है। चावै कोई वार–तिंवार अर मंगळ ओछब व्हौ, लुगायां मैंदी रा हाथ अवस रचावै। मैंदी रा गीत भी केई अर भांतां भी केई भांत–भांत री मैंदी अर भांत–भांत रा गीत। चावै गरीब घराणा री व्हौ चावै अमीर घराणा री, मैंदी सब रै ई हिवड़ा री हांसज कहीजै। मैंदी हाथां री कळाई सूं लेय'र पगां री पींड्यां तक देवण रौ रिवाज है। इणरी भांतां में मोरकलास, छैलभंवर री भांत, चौकड़ी चटाई, सोपारी, ओछाड, गुणा, फीण्या–फूल, चूंदड़ी, केरी रौ झाड़, भमरौ घेवर, चंग, कुंभकळस, रुपया भांत, बाजोट, तारा, पतासा, बीजणी नै मैंदी रौ झाड़ सबां सूं ज्यादा सरायौ अर मांड्यौ जावै।

काष्ठ–कला

लकड़ी री बणी चीजां परली कारीगरी भी देखतां ई बणै। भांत–भांत री पूतळ्यां सूं लेईनै गणगौर, ईसर, तोरण, बाजोट, कावड़, हिंगळाट, ढोलिया, लंगुरया, देवी–देवता, चौपड़ां, खांडा, देवदास्यां, वेवाण, मुखौटा, जंतरबाजा, कठपूतळ्यां नै गीगला रा गाडौ, घोड़ा कोरया–चितरया अस्या लागै जाणै आंनै बणावा वाळौ तौ कोई भगवान री दरगा रौ ईज आदमी व्है सकै।

भांत–भांतीली कलावां

होळी माथै छोरयां होळी माता रै खातर गोबर रा वड़ल्या अर चूड़ी, रखड़ी, नेवरयां, टणका तमण्या, हथपान, सिंघाड़ा, कापडा, सोपारी, कांगसी, जीभ नै नारेळ रै रूप में गैणला बणा'र आंरी माळा कर होळी नै पैरावै अर गीत गोठां करै। सकरांत नै भी तरै–तरै रा सकरांतड़ा बणाया जावै। लुगायां गोबर ले'र आपणी चूड़्या–बींट्यां रा निसांण पाड़ै। दोई हाथां री मुठियां भेळी कर गाय, बळद अर छारी रा खुर मांड, अंगोठा सूं सात्या, पान नै बारीक–बारीक थापा बणावै अर आं सबनै पूज्यां पछैई घरलिछम्यां अपणौ वरत खोलै। रंग्यथका चांवळां रा भी मिंदरां में तरै–तरै रा चौक पूरया जावै। केई जात्यां में मिनख रै मरयां पछै संखाढाळ में चांवळा रौ वैकुंठ, रामदे रा पगल्या, काळा–गोरा भैरूं, रूपांदे, तोळांदे, सुगना, डाळी, हड़मान, अंबाव, तरसुळ नै वासग बणाया जावै। दिन भर काम करयां पछै रात नै सुवा नै खाट रौ आसरौ लेणौ पड़ै। पण आ वात कदी सोची कै खाट री बुणावट भी अेक ऊंची कळा है। मैंदी अर मांडणां री तरै सूं खाट भी लेरिया, चौपड़, डाबा, पुतळी चौकड़ी, जसी भांतां में बुणी जावै। अेक भांत बेवजो तो अतरी बारीक व्है कै अणी पर जवार रा दाणा बखेर दो तोई अेक दाणी नीचै नीं पड़ सकै। केई बडाबूढां री जबान सूं आ बात भी सुणवा नै मिलै कै अेक सांप री अकरती री बुणाई भी व्है। असी बुणाई री खाट ऊपर कदैई सांप नीं चढै। मिठायां में भी लोककलावां रा केई रूप देख्या जाय सकै। लोककलावां रौ औ पसार तरै–तरै री धातुवां अर हाथी दांत री बणी चीजां, रंगाई, छपाई, सिलाई, सलमा–सितारा, गोटा–किनारी आदि सैकड़ां रूपां में देखण नै मिळै। आं कलावां रै पिछाड़ी आपणी संस्कृति रौ लंबौ इतिहास जुड़्यौ है। परिवार, समाज अर देस रा सगळा धरम–करम, रैण–सैण, खांण–पांण, राग–रंग अर जीवण रा केई आदर्श आं कलावां में घणी चतराई अर बारीकी सूं कोरीजग्या है। अै कलावां देस री भावनात्मक अेकता अर सुख समरिध री सांची साख देवै है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

रूड़ौ=रूपाळौ, सुनहरौ। चौगटा=चौखट, मुखौटा। सणगारी=शृंगारित। चितराम=चित्र। मुगदर=घोटौ, पैलवानी सारू। गोखड़ा=गवाक्ष। कंवाड़=किंवाड़, आडौ, दरवाजौ। गाबा=कपड़ा, वस्त्र। चितारौ=चित्रकार। थरप्योड़ी=थापित, थाप्योड़ी। लींपी–चूंपी नै=लीपणौ–पोतणौ। कंवळ रौ फूल=कमल रौ पुष्प। कैवत=कहावत। तिबारी=घर में तीन बारणा री खुली साळ। ओछब=उत्सव। सात्या=साखिया। सुवाग=सुहाग। संज्या=सिंझ्या, आथण। सराद=श्राद्ध।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थान नै रंगरेज कैवण सूं इण प्रदेस री कांई विसेसता परगट होवै ?
   (अ) सूरां अर संतां रौ देस। (ब) पदमणी स्त्रियां रौ देस।
   (स) रंगरेजां री बस्ती रौ देस। (द) भांत–भांत री लोककलावां रौ देस।
   ( )

2. 'जका सूरवीर आपणा नेकी रै काम सूं देवळ रै रूप में थरपीजग्या, वांरी जीवण–लीला कपड़ा माथै मांडी जावै' इण कला नै कांई कैवै ?
   (अ) पड़। (ब) थापा।
   (स) मांडणा। (द) गूदणां।
   ( )

3. 'दोई सुवाग रा चित्र है।' अै दो चित्र किसा है ?
   (अ) मैंदी अर थापा। (ब) मांडणा अर पड़।
   (स) मांडणा अर पड़। (द) गूदणां अर मैंदी।
   ( )

4. लोककलावां में 'थापा' मांडणै सूं आशय है–
   (अ) गोबर थापणै सूं। (ब) हाथ री आंगळ्यां रौ थापौ मांडणौ।
   (स) मांडणा मांडण वाळी नै थापी देवणी। (द) थापी सूं आंगणौ जमावणौ।
   ( )

5. आदिवासी लुगायां आपरौ पैलौ धरम समझै–
   (अ) हरैक तिंवार पर वरत राखणौ। (ब) शरीर पर गूदणां गुदावणौ।
   (स) हाथां में मैंदी रचावणौ। (द) गैंणा–गांठा धारण करणौ।
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोककलावां रै पाछै किण तरै रौ भाव जुड़्योड़ौ है?
2. हळदी में नींबू मिलायनै किसौ रंग बणाईजै?
3. होळी माथै छोरयां किणरी माळा बणाय नै होळी माता नै पैरावै?
4. डॉ. महेन्द्र भानावत री लिख्योड़ी किणी दो पोथ्यां रा नांव बतावौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'पड़' कुण बांचै अर किंयां बांचीजै?
2. मांडणा मांडण सूं पैलां लुगायां नै कांई–कांई करणौ पड़ै?
3. तीज–तिंवार माथै किण भांत रा मांडणा मांडण रौ रिवाज है?
4. नीचै लिख्योड़ा सबदां रा तत्सम रूप लिखौ–
   सात्या, सुवाग, सराद, संज्या, घरलिछमी
5. इण पाठ में छप्योड़ी किणी पांच लोककलावां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''देस री भावनात्मक ओकता अर लोककला'' विसय माथै सौ सबदां में ओक लेख लिखौ।
2. गूदणां अर मैंदी मांडण री लोककला नै विगतवार समझावो।
3. राजस्थान में भित्ति–चित्र उकेरण री लूंठी परंपरा रैयी है। इण कला री खासियतां विगतवार सूं उजागर करौ।
4. ''लोककला री दीठ सूं राजस्थान घणौ रूड़ौ–रंगीलौ है।'' खुलासौ करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आंगणै पर जिका चितराम मांड्या जावै वै मांडणा कहीजै। मांडणा मांडवा पैली आंगणा नै गोबर–पीळी सूं लींपी–चूंपी नै सापसूप बणायलै पछै आधा सूख्या अर आधा आला आंगणा पर लुगायां रूई रा फोया नै पांडू रै पाणी में बोल नै आपणी देवळ पूजणी आंगळी सूं मूंडै बोलता मांडणा मांडै।

(ब) लकड़ी री बणी चीजां परली कारीगरी भी देखतां ई बणै। भांत–भांत री पूतळ्यां सूं लेईनै गणगौर, ईसर, तोरण, बाजोट, कावड़, हिंगळाट, ढोलिया, लंगुर्‍या, देवी–देवता, चौपड़ां, खांडा, देवदास्यां, वेवाण, मुखौटा, जंतरबाजा, कठपूतळ्यां नै गीगला रा गाडोलिया, घोड़ा कोर्‍या चितर्‍या अस्या लागै जाणै आंनै बणावा वाळौ तौ कोई भगवान री दरगा रौ ईज आदमी व्है सकै।

निबन्ध
पर्यावरण रा पागोथिया

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई

निबन्धकार–परिचै

अबूबशहर, सिरसा (हरियाणा) में जनम। अेम. अे. (इतिहास), पीअेच.डी., पी. जी., डिप्लोमा इन जर्नलिज्म, अेलअेल. बी. तांई शिक्षा। नाथियै रा सोरठा, तीतर पंखी बादळी, राजस्थानी रामायण, विलोजी की वाणी, विश्नोई संतों के हरजस, कवि गंग के कवित्त, पंचशती स्मारिका, गुरु जांभोजी एवम् विश्नोई पंथ का इतिहास, महात्मा सुरजनजी के हरजस आद छप्योड़ी पोथ्यां। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ, शिलालेख, पट्टा–परवाणा पढण में महारथ हासल। 'तीतर पंखी बादळी' पोथी माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ 'पैली पोथी पुरस्कार'। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में वरिष्ठ सोध अधिकारी अर प्रभारी पद सूं सेवानिवृत्त।

पाठ–परिचै

जंभेश्वर महाराज कैयौ है–

आकास, वायु, तेज, जल, धरणी।
तामें सकल सिस्टी री करणी।।

मतलब कै आं पांच तत्त्वां रै जोग सूं ई सगळी स्रस्टि बणी है। अठै तेज रौ अरथ अगनी है। आ बात बिसवाबीस ई सही है। 'पिंडै सो ई बिरमंडै।' आं पांचूं तत्त्वां रै मेळ सूं बिरमांड बण्यौ है। आं तत्त्वां मांय घाट–बाध हुवतां ई स्रस्टि रौ संतुलन बिगड़ जावै, अठीनै काया तौ काची माटी रौ कुंभ है, सो इण घाट–बाध सूं स्रस्टि में दोस वापरै। वौ दोस ही छेवट विणास रौ कारण बणै। स्रस्टि रै इण दोस सूं दूसित हुवणौ ई प्रदूसण है। स्रस्टि रौ सही संतुलन ई पर्यावरण रौ सुद्ध रूप है। बणराय नै बणाई राखणी ई पर्यावरण री सुद्धता है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई आपरै निबंध 'पर्यावरण रा पागोथिया' में पर्यावरण री संक्षेप ओळखाण करावतां थकां पर्यावरण री रुखाळी सारू जंभेश्वर महाराज री सीख उजागर करी है अर साथै ही इण घण महताऊ यज्ञ मांय बिश्नोई समाज रै अनुपम योगदान री जाणकारी करवाई है। आज वन्य–जीव अर बणराय दोनूं बिखै मांय है। अैड़ी बिखमी वेळा मांय विद्यार्थियां सारू सरल अर सहज भासा मांय इण भांत री अजरी–ओपती ओळखाण री पूरी दरकार है।

52

पर्यावरण रा पागोथिया

पर्यावरण सबद आपणै च्यारूंमेर रै वातावरण रौ जीवण सूं संतुलन बणायौ राखण रै कांनी संकेत करै। प्रकृति रा पांच तत्त्व है– पवन, पाणी, आभौ, आग अर माटी। आं पांच तत्त्वां सूं मिनख री काया बणै। आं तत्त्वां री घटत–बढत सूं पर्यावरण मांय बिगाड़ आवै अर औ बिगाड़ मिनखां, पंखेरुआं अर जीव–जिनावरां रै जीवण मांय बिगाड़ लावै। आं तत्त्वां रै बराबरी रै जोग सूं सुद्ध प्राकृतिक पर्यावरण रौ निर्माण हुवै। सुद्ध पर्यावरण बणायौ राखण सारू आपणा संत–महात्मा, रिसी–मुनियां अर बूढा–बडेरां आपां नै घणी–घणी बातां बताई, जिणां रौ आपणै जीवण मांय घणौ मैतव है। मोटै रूप सूं पर्यावरण तीन तरां रौ मान्यौ गयौ है– अंदरूणी, बाहरी अर सामाजिक। आपणै अठै सतजुग मांय 'कळप–बिरछ' अर 'कामधेनु' रौ उल्लेख मिळै। अै दोनूं ई मिनख री सैं कामनावां पूरण करणिया मान्या जावता। जिण तरां आज रै समै मिनख नै रोटी, कपड़ै अर मकान री जरूरत है अर आंरी पूरती अेकै सागै बिरछ कर सकै तौ वौ बिरछ कलप बिरछ ईज तौ है। दिखणादै भारत मांय आज ई लोग नारेळ रै बिरछ नै कळप–बिरछ मानै वौ अेकै साथै वांनै दूध, पाणी, गाभौ–लत्तौ, झूंपा–झूंपड़ी, आहार–विहार देवै। मरुथळ मांय लोग खेजड़ी रै रूंख नै कळप–बिरछ मानै खेजड़ी री छिंयां सारू लोगां आपरा माथा ई कटा नांख्या। इणी तरां 'कामधेनु' दूध देवण आळी पसुवां री जाति रौ संकेत करै। मिनख रै जीवण मांय रूंखां अर दुधारू पसुवां रौ महताऊ योग रैयौ।

पर्यावरण रौ अरथ भोत बडौ है। आप इणनै हर समै मैसूस कर सकौ। पवन–पाणी, जीव–जिनावर, पेड़–पौधा आद सै जीव अर निरजीव मिळ'र पर्यावरण बणावै। पर्यावरण मांय धरती री सै भौतिक, रासायनिक अर जैविक अवस्थावां शामिल है। इणनै जीव–विग्यान, भौतिक–विग्यान, रसायन–विग्यान, भू–विग्यान, समाज–सास्त्र, मानव–सास्त्र अर इतिहास सूं समझ्यो जाय सकै। आपां बीजा सबदां मांय कैय सकां हां कै जिण वातावरण मांय आपां रैवां हां, जिण माटी मांय खेलां हा, जिण पवन मांय सांस लेवां हां अर जठै रौ पाणी पीवां हां, प्रकृति रै आं कामां रौ नांव ईज तौ पर्यावरण है।

पर्यावरण मांय वै सै बातां आवै जकी सजीवां सूं न्यारी है अर जकी किणी न किणी रूप मांय रूंखां रै जीवण माथै असर न्हांखै। वातावरण रै जीवतै भाग मांय मिनख अर बणराय है अर अणजीवतै मांय पवन, पाणी, प्रकाश, ताप अर माटी सामल है। आं कारकां मांय असुंतलन होवण सूं पर्यावरण रै संरक्षण रौ खतरौ पैदा होयग्यौ है।

मिनखां नै आहार–पाणी माटी मांय ऊग्या हरिया रूंखां सूं मिळै। अै पौधा सूरज री किरणां नै रासायनिक क्रिया सूं प्रकास मांय बदळै। मिनख जकौ सांस लेवै वौ इणी रूंखां री छोड्योड़ी ऑक्सीजन है। इण तरां पेड़–पौधा, जीव–जंतु पर्यावरण रा जैविक तत्त्व है अर अै पारिस्थितिकी यंत्रस्वना करै। इण तरां सगळा जीव–जंतु पिरथवी रै प्राकृतिक स्रोतां माथै निर्भर है। पर्यावरण रै किणी तत्त्व में किणी भांत रौ खतरौ है तौ वौ खतरौ है मिनख नै आपरै जीवण रौ।

भोजन रै बिना मिनख केई दिन जी सकै, पाणी रै बिना भी उणरी सांसां कीं समै चाल सकै, पण पवन रै बिना मिनख अेक मिनट ई नीं जी सकै। मिनख पवन मांय सांस लेवै,

जळ पीवै अर आखर माटी मांय मिळ जावै। माटी सूं सगळां नै भोजन मिलै। माटी री उर्वरता इण मांय मिळण वाळा कोटि–कोटि अणदेख्या जीवां सूं है, जका माटी रै बणावण अर उणरी उर्वरता बधावण में हाथ बटावै। जे अै जीव नीं होवता तौ धरती बंजर होवती अर फसलां भी नीं होवती।

भारत री संस्कृति वनां री संस्कृति है। इणसूं आपणै इतियास, दरसण अर परंपरा रौ जलम होयो। बडा संत–महात्मा, रिसी–मुनि, तपसी अर जति–जोगेसर वनां मांय ई रैया। वै आपरौ ग्यान अठां ई लियौ अर भारत रै जन–गण नै प्रभावित कर्‌यौ। आपणां जूना ग्रंथ– वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आद आं वनां मांय रचीज्या जिणां मांय ग्यान, दरसण अर विग्यान है।

विष्णु–पुराण मांय अेक कथा है, जिणसूं पतौ चालै कै राजा वेन रै अत्याचारां सूं तंग आय'र रिसियां उणनै मार नांख्यौ। उणरै शरीर सूं पिरथु रौ जलम होयौ। पिरथु नै राज मिलतां ई काळ पड्‌यौ। पिरथवी अन्न देवणौ बंद कर दियौ। पिरथु पिरथवी नै मारण चाल्यौ। पिरथवी अन्न देवणो सरू कर दियो अर आपरै दूध सूं वनस्पतियां नै सींची। इण कारण ई पिरथवी रौ अेक नांव शाकंभरी है। पिरथवी री पूजा सूं भारत देवी री पूजा सरू हुई। सिंधु घाटी री सभ्यता रै समै री अेक मुद्रा मिली है, जिणमें लुगाई रै गरभ सूं अेक ऊगतै रूंख रौ चितराम है। इणसूं पतौ चालै कै पिरथवी बनराय री देवी है।

भास्कर गृह्य सूत्र मांय सीता रौ उल्लेख करसण री देवी रै रूप मांय होयौ है अर राम रौ उल्लेख अेक किसान रै रूप मांय हळ जोततां होयौ है। इणसूं औ पतौ चालै कै आपां रा देवी–देवता बनराय नै कित्तौ प्यार करता हा।

बिरज रा लोग पैला इंदर री पूजा करता हा। क्रिसण बठै गोवर्धन री पूजा सरू करी। वै गो–धन नै मैतव दियौ। खेतां सूं आगै वन है अर वनां सूं आगै भाखर। म्हारी गति भाखरां तांई है।

भगवान राम रौ वनवास जगचावौ है, जको वै पंचवटी वन मांय काट्यौ। भगवान क्रिसण वन मांय गायां चराई। पांडवां आपरौ अज्ञातवास वनां मांय काट्यौ। गौतम बुद्ध अर महावीर स्वामी नै ग्यान वनां रै रूंखां हेठै ई मिल्यौ। रूंखां रै बिना अै सगळी बातां पूरी नीं होय सकै। औ ईज कारण है कै किणी बात नै जे धरम सूं जोड़ दियौ जावै तौ वा घणी असरदार बणै। इणी कारण पुराणां लोगां रूंखां नै धरम रौ अेक अंग बणायौ अर वांरी पूजा सरू करी। रूंखां नै संरक्षण दियौ। इणी कारण अठै रा लोग पींपळ, बड़, खेजड़ी, तुळसी आद री पूजा करै अर वांनै काटणौ पाप समझै। रूंख आरोग्य री ओखद है, धरती रौ धणी है, गुणां रौ गुड़ है अर मिनख रौ मान है। राजस्थान मांय बड़ रै रूंख मांय वासुदेव, पींपळ मांय विष्णु अर आकड़ै मांय महादेव रौ वासौ मान्यौ है। अठै री लुगायां पींपळ पूजती गावै–

पींपळ पूजण म्हैं गई कुळ आपणै री लाज।
पींपळ पूज्यां हर मिल्यौ, अेक पंथ दो काज।।

भारत मांय नदी–नाळा अर भाखरां माथै बण्योड़ा, तीरथ, मंदिर अध्यात्म अर संस्कृति रा केंद्र अर भौगोलिक चेतना रा वाहक है। जळ रात–दिन बैवै। वौ काया मांय प्राण घालै, माटी सूं मिळ'र वनस्पतियां नै उगावै। वां सूं अन्न मिळै। बठैई पसुवां सूं दूध मिळै, दूध सूं खून बणै, खून सूं जीवण चालै। मिनख नै बळ मिळै। पैलां री टैम गांवां मांय पसुवां रै चरण खातर कीं जमीं खाली छोडता, जिण माथै खेती नीं खड़ी जावती, अैड़ी जमीं नै गोचर भूमि कैवता अर जकी जमीं देवी–देवतावां रै नांव छोडता उणनै ओरण कैवता। ओरण मांय किणी भांत रै रूंख नै काटण री मनाई होवती। राजस्थान मांय पाबूजी

री ओरण, करणीजी री ओरण, जांभैजी री ओरण चावी है। इण तरां जंगळां नै अबोट राखण रौ औ अेक उमदा तरीकौ हौ। इणसूं पसु–पंखियां नै आसरौ मिळतौ अर मिनखां नै फळ–फूल मिळता।

अशोक सम्राट पसुवां रै संरक्षण सारू आपरै पैलै आदेस मांय लिख्यो है कै जानवरां नै मारणौ बंद कर्‌यौ जावै। इण मांय घणी बुराई है। वै रूंखां रै संरक्षण सारू आपरै दूजै आदेस मांय लिख्यौ है कै पिरथवी रै सगळै राजावां नै सड़क रै किनारै रूंख लगावणा चाईजै, कुआं खोदणा चाईजै अर तरकारी बोवणी चाईजै। अेक विद्वान इदरीस इग्यारवीं सदी रै बारै में लिख्यौ है कै भारत मांय मांस खातर कोई भी जानवर नीं मार्‌यो जावतौ हौ अर अैड़ौ कोई बूढौ बैल नीं हौ जकै नै चारौ नीं मिळतौ हौ।

गुजरात मांय तौ रूंख नै बचावण सारू उण माथै फाट्योड़ा गाभा न्हाख देंवता। अैड़ै रूंख नै वै चिथड़िया मामा कैवता। राजस्थान मांय भी खेजड़ी नै चूनड़ी ओढावण रौ ऊजळौ धारौ है। भाखर नै संरक्षण देवण खातर अठै भाठां पर सिंदूर रौ टीकौ काढ देवै। पर्यावरण रै संतुलन खातर पेड़ नीं काटण रै साथै–साथै नूंवां पेड़ लगावण में भी लोग रुचि राखता। मरुखेतर री रियासतां रा जूना पोथी–पानड़ां मांय आ जाणकारी हासिल हुवै कै किसानां नै धोरां वाळी धरती मांय खेती करण सारू प्रोत्साहन दियौ जावतौ। राज री आ मनसा रैवती कै करसा जिका अैड़ी धरती नै खड़सी तौ धोरां रौ फैलाव घटसी। जोधपुर अर बीकानेर रै राज मांय तौ हरी खेजड़ी नै काटण पर राज कांनी सूं जुरमानै रौ प्रावधान हो।

पर्यावरण रै इतिहास मांय 15वीं सदी रौ कीं खास मैतव है। उण टैम सन् 1451 मांय गुरु जांभोजी रौ जलम मरुभोम रै नागौर परगनै रै पीपासर गांव मांय लोहटजी पंवार राजपूत रै घर होयौ। वांरी माता रौ नांव हांसादेवी हौ। वांनै पर्यावरण नै सुद्ध राखण री सीख आपरै मां–बाप सूं ई मिळी। वै बालपणै में माटी रा धोरां पर रमता, गायां चरावता अर पेड़ लगावता। इण तरां वै पर्यावरण संरक्षण री अेक मुहिम छेड़ दी। सन् 1485 मांय वै विश्नोई पंथ री थापना करी, जिणरा गुणतीस धारमिक नियम है। आं नियमां मांय पर्यावरण रै संरक्षण रा नियम इण भांत है :– दिनूगै सिनान कर'र होम करणो, हर्‌या रूंख नीं काटणा अर नीं काटण देवणा, जीवां पर दया राखणी अर मांस नीं खावणौ, था अमर राखणी अर बैलां नै बधिया नीं करवावणौ, पाणी अर दूध नै छाण'र लेवणौ अर ईंधण नै झाड़'र काम में लेवणौ, वाणी साच बोलणी आद। वै कैयौ– 'जीव दया पाळणी, रूंख लीलौ नीं घावै।'

गुरु जांभोजी आपरौ पैलो परचौ राव दूदैजी मेड़तियै नै पीपासर रै कुअै कनै खेजड़ी रै हेठै दियौ। वै आपरौ पैलौ सबद होम करतां अेक बामण नै कैयौ। वै आपरा घणकरा सबद समराथळ रै धोरै माथै हरि कंकेड़ी रै पेड़ हेठै दिया। वै कैयौ– 'हरि कंकेड़ी मंडप मैड़ी, तहां हमारा बासा।' वै पेड़ काटण वाळां नै कैयौ– 'सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी वणरायौ।' गुरु जांभोजी विश्नोई पंथ री थापना भी अेक हरि कंकेड़ी रै पेड़ हेठै बैठ'र करी ही। जद गुरु जांभोजी नौरंगी रौ भात भरण नै रोटू (नागौर) पधार्‌या तौ वै अेक खेजड़ियां रौ बाग लगायौ हौ, जकौ आज तांई है। सुरजीबाई रै बुलावै पर गुरु जांभोजी जद मुरादाबाद पधार्‌या तद वै अेक खेजड़ी रौ पेड़ लोदीपुर मांय लगायौ जिकौ आज भी उणां री साख भरै। जोधपुर रै

राजा मालदेव नै गुरु जांभोजी लोहावट रै जंगळ मांय अेक खेजड़ी हेठै उपदेस दियौ हौ। जद जांभोजी जैसलमेर गया तद वै रावळ जैतसी सूं दोय वचन लिया– 1. आपरै राज में लीला रूंख नीं काट्या जावै, अर 2. अबोला जीवां नै नी मारया जावै। इण तरां वै जैसलमेर राज मांय रूंखां अर अबोला जिनावरां नै संरक्षण रौ पट्टौ दिरायौ। गुरु जांभोजी आपरौ सरीर मिगसर बदी नवमी, वि. सं. 1593 मांय लालसर री साथरी रै अेक हरि कंकेड़ी रै पेड़ नीचै छोड्यो। आं सगळी बातां सूं वांरौ बिरछां री खातर हेत रौ पतौ लागै।

जे मिनख हिंसा नीं करसी तौ वौ मांस नीं खावैलौ। मांस नीं खावण सूं साकाहार नै बधापौ मिळै। मिनख मांय सात्विक गुणां री बधोतरी हुवै। जद हिंसा नीं हुवैली तद वन्य प्राणियां नै संरक्षण मिळसी। वन्य प्राणियां रै संरक्षण सूं प्रकृति रै मांय संतुलन बणैला। प्रकृति रै मांय संतुलन सूं ई पर्यावरण री सुद्धि है। औ योगदान अपणै आप मांय उल्लेखजोग है। गुरु जांभोजी मुसलमान नै जीव हिंसा नीं करण रौ उपदेस देंवता कैयौ–

चरि फिरि आवै सहजि दुहावै,
तिहकी खीर हलाली।
तिहकै गळै करद क्यूं सारौ,
थे पढ गुण रहिया खाली।।

गुरु जांभोजी रै पर्यावरण आंदोलन नै विश्नोई पंथ रा लोगां आगै बधायौ। वांरै चेलै वील्होजी रूंख लगावण अर पाणी छाण'र पीवण सारू जोर दियौ। वां कैयो– "बिरछ काटण वाळै मिनख नै तो नरक मांय भी जाग्यां नीं मिळैला। रूंखां री रुखाळी सारू सै सूं पैलां वि. सं. 1661 मांय दो सगी बैनां करमां अर गोरां आपरा माथा कटाया। इण बात रौ पतौ वील्होजी री साखी 'करमां अर गोरां' सूं चालै। वांरी अेक दूजी साखी 'तिलवासणी' सूं पतौ चालै कै तिलवासणी गांव री खिवणी नेतू अर मोटू भी आपरा पिराण बिरछां री रिछ्या सारू दिया। इणी तरां वि. सं. 1700 मांय पोलावास (मेड़ता) गांव रा बूचोजी अेचरा आपरौ बळिदान रूंखां खातर दियौ। विश्नोइयां रौ नारौ है– "सिर सूंपां रूंखां सटै, तौ भी सस्तौ जाण।"

बिरछां री रिछ्या सारू सै सूं बडौ बळिदान सन् 1730 मांय जोधपुर राज रै खेजड़ली कलां गांव मांय होयौ। उण टैम जोधपुर रौ राजा अभयसिंघ हौ। अठै रै किलै रै निरमाण वास्तै चूनौ पकावण सारू लकड़ियां री जरूरत ही। अठै रै दीवाण गिरधर भंडारी कनै रै गांव खेजड़ली सूं खेजड़ी रा रूंख काटण रौ आदेस दियौ। खेजड़ियां री रिछ्या सारू 363 विश्नोई आपरौ बळिदान दियौ, जिण मांय मिनख, लुगायां अर बाळक भी हा। देस जाति अर धरम खातर तौ घणा साका होया है, पण खेजड़ियां खातर अैड़ौ खड़ाणौ आखी दुनियां मांय नीं होयौ। आं 363 मांय सै सूं पैलां बळिदान इमरता देवी दियौ। विश्नोई पंथ रा लोग इणी तरां ई वन्य जीवां री रिछ्या सारू भी आपरौ बळिदान देंवता आया है। पर्यावरण आंदोलन नै आगै बधावण सारू आज बीजा लोग भी आगै आ रैया है। वै भी आपरौ माथौ बिरछां अर वन्य प्राणियां सारू देवण नै त्यार है। आज रै 'चिपको आंदोलन' री जड़ां मांय गुरु जांभोजी रै उपदेसां रौ ईज हाथ है।

भारत रा वनस्पति वैग्यानिक जगदीशचंद्र बसु औ सिद्ध कर्यौ कै पेड़–पौधां मांय भी जीव हुवै। वै सियाळौ–उन्हाळौ जाणै। पण आ बात विश्नोई पंथ री थापना करण वाळा गुरु जांभोजी 15वीं सताब्दी मांय बतायदी ही। इण बात सूं औ पतौ चालै है कै गुरु जांभोजी पैला पर्यावरण मिनख हा। भारत रै संविधान रै मूळ अधिकारां अर कर्तव्यां मांय पर्यावरण रै संरक्षण अर संवर्धन रौ, वन अर वन्य प्राणियां री रिछ्या रौ प्रचार करैलौ। प्राकृतिक पर्यावरण

मांय केई वन–झील–नदी अर वन्य जीव है। राज वांरी रिछ्या करै, वांरौ संवर्धन करै अर प्राणी मात्र पर दया राखै।

आज पर्यावरण नै लेय'र सगळी दुनिया चिंतित है। इण माथै चरचावां चाल रैयी है। पवन, पाणी अर माटी प्रदूसित होय चुकी है, पर्यावरण रै जाणकारां रौ कैवणौ है कै जे इण तरां मिनख चालतौ रैयौ तौ मिनख रौ इण धरती माथै सांस लेवणौ दो'रौ होय जावैलौ। वायुमंडळ मांय कारखानां रै धुंवै री जहरीली गैसां फैलती जावै, जळ प्रदूसित होवतौ जावै, रासायनिक खादां घालण सूं धरती बंजर होवती जावै। प्रकृति सूं मिनख री आ अणूंती छेड़खानी आछी कोनी। आज वैग्यानिक चिंतित है कै वायुमंडळ री ओजोन परत मांय ठींडो होयग्यो है। फेरूं आपां नै सूरज री जैरीली किरणां सूं कुण बचावैलौ? इणनै बचावण वाळौ देव है– पर्यावरण। पर्यावरण रा पागोथिया चढ'र ई मिनख प्रकृति रै डागळै चढ सकै। जे मिनख प्रकृति रौ सही उपभोग करणौ चावै है तौ उणनै सुध पर्यावरण रौ निरमाण करणौ चाईजै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भांत=तरै–तरै, बहुत। समै=बगत, समय। घावै=प्रहार करणौ। खडाणौ=बळिदान रौ उछाव। बिरछ–रूंख, पेड़। ओरण=अरण्य (वा गोचर भूमि जिण मांय पेड़–पौधा व्है अर वांनै काट्या नीं जावै।)। आभौ=आकास। बणराय=वनस्पति। ठींडौ=छेद। लाज=इज्जत।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बिरज रा लोग क्रिसण सूं पैलां पूजा करता हा–
   (अ) विष्णु री (ब) इन्दर री
   (स) शंकर री (द) देवी री
   ( )

2. जानवरां नै मारणौ बंद करण रौ आदेस जारी करियौ–
   (अ) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (ब) राजा भोज
   (स) हर्षवर्धन (द) सम्राट अशोक
   ( )

3. हरी खेजड़ी काटण पर जुरमानै रौ प्रावधान हौ–
   (अ) जोधपुर अर बीकानेर राज में (ब) जैसलमेर अर सिरोही राज में
   (स) जयपुर अर अलवर राज में (द) किशनगढ़ अर जोधपुर राज में
   ( )

4. गुरु जांभोजी विश्नोई पंथ री थापना करी ही–
   (अ) खेजड़ी रै रूंख हेठै (ब) बोरड़ी रै रूंख हेठै
   (स) कंकेड़ी रै रूंख हेठै (द) पींपळ रै रूंख हेठै
   ( )

5. जोधपुर राजा रै किण दीवान खेजड़ली सूं खेजड़ी काटण रौ हुकम दियौ–
   (अ) अभयसिंघ (ब) गिरधर भंडारी
   (स) इन्द्रचंद सिंघवी (द) सवाईसिंह चांपावत
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. गुरु जांभोजी रै मा–बाप रा नांव लिखौ।
2. पीपासर मांय किसा महात्मा जलमिया?
3. जांभोजी री बगत मेड़ता रौ शासक कुण हौ?
4. 'ओरण' रौ तत्सम रूप लिखौ।
5. 'गोचर' किण भूमि रौ नांव है?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. जैसलमेर रै रावळ जैतसी नै जांभोजी किसा दोय वचन पाळण रौ आदेस दियौ?
2. पर्यावरण रै संतुलन सारू किसै पांच तत्त्वां रौ संरक्षण जरूरी है?
3. पर्यावरण बाबत जांभोजी रा कोई दोय महताऊ नियमां रा नांव लिखौ।
4. खेजड़ी री रुखाळी सारू जोधपुर राज रै किण गांव मांय सै सूं पैली कुण आहुती दीवी?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पर्यावरण नै सुध राखण सारू कांई–कांई उपाव है ?
2. वन्य जीव अर वणराय रै विणास सूं कांई नुकसाण हुवै ?
3. खेजड़ियां री रुखाळी सारू हुयोड़ा खास–खास खड़ाणां रा नांव लिखतां थकां किणी दोय खड़ाणा रो वरणाव करौ।
4. 'पर्यावरण रा पागोथिया' निबंध सूं कांई सीख मिळै? उजागर करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) भारत री संस्क्रति वनां री संस्क्रति है। इणसूं आपणै इतियास, दरसण अर परंपरा रौ जलम होयो। बडा संत–महात्मा, रिसी–मुनि, तपसी अर जति–जोगेसर वनां मांय ई रैया। वै आपरौ ग्यान अठां ई लियौ अर भारत रै जन–गण नै प्रभावित कर्‌यौ।

(ब) भारत रा वनस्पति वैग्यानिक जगदीशचंद्र बसु औ सिद्ध कर्‌यौ कै पेड़–पौधां मांय भी जीव हुवै। वै सियाळौ–उन्हाळौ जाणै। पण आ बात विश्नोई पंथ री थापना करण वाळा गुरु जांभोजी 15वां सईका मांय बतायदी ही। इण बात सूं औ पतौ चालै है कै गुरु जांभोजी पैला पर्यावरण मिनख हा।